समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ जुलाई २०२५ ● वर्ष : २९ ● अंक : १ (निरंतर अंक : ३३७) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

न तद्भासयते सूर्यो
न शशांको न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते
तद्धाम परमं मम ॥

(गीता : १५.६)

जहाँ जाकर मनुष्य फिर संसार में नहीं लौटते उस स्वयंप्रकाश पद को न तो सूर्य, न चन्द्रमा और न अग्नि प्रकाशित करते हैं । उस प्रकाशमय आत्मा को जानकर मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है । उसकी प्रीति, उसका अनुभव, उसका ज्ञान पा लो और निहाल हो जाओ । - पूज्य बापूजी

संत आशारामजी बापू के साथ जो हुआ है वह सत्य से कोसों दूर है, बड़ा षड्यंत्र चल रहा है ।
- महामंडलेश्वर श्री राजेन्द्रानंद गिरिजी, कार्यकारी अध्यक्ष, अखिल भारतीय संत समिति (गुज.)

जो सम्भव है उसीमें लग जाओ - पूज्य बापूजी

असम्भव को सम्भव करने की बेवकूफी छोड़ देनी चाहिए और जो सम्भव है उसको करने में लग जाना चाहिए। शरीर एवं संसार की वस्तुओं को सदा सँभाले रखना असम्भव है अतः उनमें से प्रीति हटा लो। मित्रों को, कुटुम्बियों को, गहने-गाँठों को साथ ले जाना असम्भव है अतः उनमें से आसक्ति हटा लो। संसार को अपने कहने में चलाना असम्भव है लेकिन मन को अपने कहने में चलाना सम्भव है। दुनिया को बदलना असम्भव है किंतु अपने विचारों को बदलना सम्भव है। कभी दुःख न आये ऐसा करना असम्भव है पर दुःख कभी चोट न करे ऐसा बनना सम्भव है। कभी सुख चला न जाय ऐसी अवस्था पाना असम्भव है परंतु सुख चले जाने पर भी दुःख की चोट न लगे ऐसा चित्त बनाना सम्भव है। अतः जो सम्भव है उसे कर लेना चाहिए और जो असम्भव है उससे टक्कर लेने की जरूरत क्या है ?

बाहर के मित्र को सदा साथ रखना सम्भव नहीं है किंतु अंदर के मित्र (आत्मा-परमात्मा) का सदा स्मरण करना एवं उसे पहचानना सम्भव है। बाहर के पति-पत्नी, परिवार, शरीर को साथ ले जाना सम्भव नहीं है परंतु मृत्यु के बाद भी जिस साथी का साथ नहीं छूटता उस साथी के साथ का ज्ञान हो जाना, उस साथी से प्रीति हो जाना - यह सम्भव है।

वासना हमें असम्भव को सम्भव करने में लगाती है। संसार में सदा सुखी रहना असम्भव है लेकिन मनुष्य संसार में सदा सुखी रहने के लिए मेहनत करता रहता है। संसार में सदा संयोग बनाये रखना असम्भव है पर मनुष्य सदा संबंध बनाये रखना चाहता है कि रुपये चले न जायें, मित्र रूठ न जायें, देह मर न जाय... किंतु देह मरती है, मित्र रूठते हैं, पैसे जाते हैं या पैसे को छोड़कर पैसेवाला चला जाता है। जो असम्भव को सम्भव करने में लगाये वह है वासना का वेग। उस वासना को भगवत्प्रीति में बदल दो।

वासना से बचते हैं तो भगवत्प्रीति उत्पन्न होती है और प्रीति से हम ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जायेंगे त्यों-त्यों भगवत्स्वरूप तत्त्व की जिज्ञासा उभरती जायेगी। भगवान का सच्चा भक्त अज्ञानी कैसे रह सकता है ? भगवान में प्रीति होगी तो भगवद्-चिंतन, भगवद्-ध्यान, भगवत्स्मरण होने लगेगा। भगवान ज्ञानस्वरूप हैं अतः अंतःकरण में ज्ञान की जिज्ञासा उत्पन्न होगी और उस जिज्ञासा की पूर्ति भी होगी।

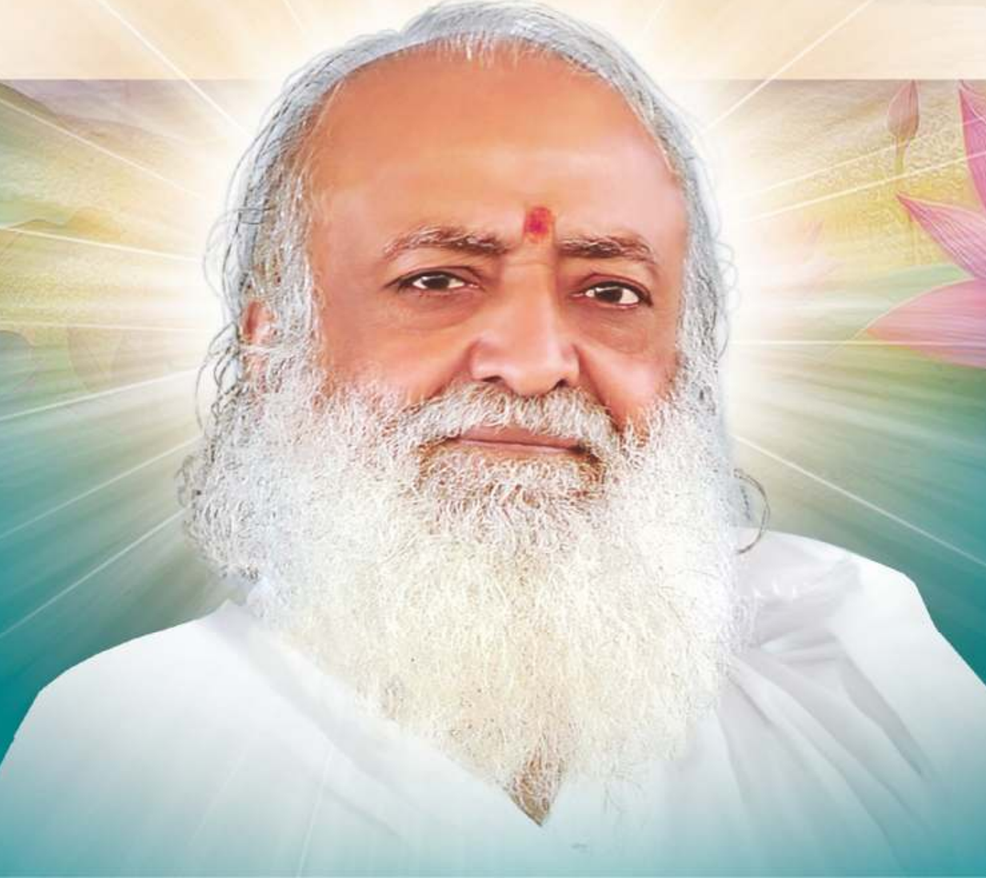

रजि. समाचार पत्र

लोक कल्याण सेतु

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २९ अंक : १

निरंतर अंक : ३३७ आवधिकता : मासिक

प्रकाशन दिनांक : १५ जुलाई २०२५ मूल्य : ₹ ४.५०

पृष्ठ संख्या : २८ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

सम्पर्क पता :

'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)

फोन : (०७९) ६१२१०७३९

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ४५	(१) पंचवार्षिक :	US $ ५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ८०	(२) आजीवन :	US $ १२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १९५		
(४) आजीवन :	₹ ४७५		

✲ विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ✲

अनादि	DIGIANA DIVYA JYOTI	सेवाकार्य भी		
रोज सुबह ६:२० व रात्रि ११ बजे	रोज रात्रि १० बजे	Asharamji Bapu	Asharamji Ashram	Mangalmay Digital
		यूट्यूब चैनल्स		

✲ 'अनादि' चैनल टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है। ✲ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।

लोक कल्याण सेतु ई-मैगजीन के रूप में भी पढ सकते है। ई-मैगजीन अथवा हार्ड कॉपी के सदस्य बनने के लिए क्लीक करो...

www.lokkalyansetu.org

लोक कल्याण सेतु रुद्राक्ष मनका योजना :

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

इस अंक में...

- **मनुष्य की विलक्षणता...**

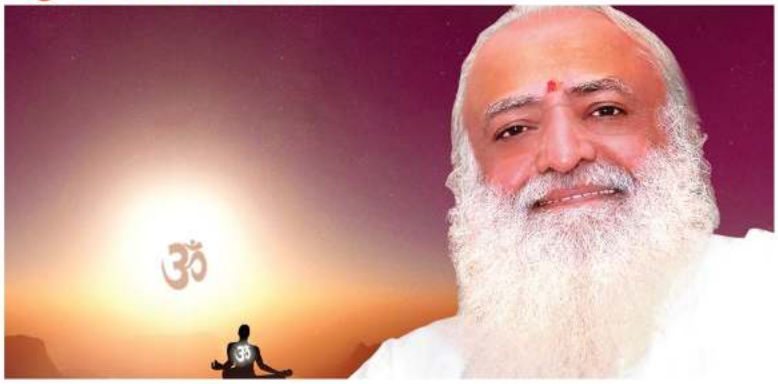

कवर स्टोरी एक होती है कामना, जो जीवमात्र में होती है - खाने की, पीने की, भोगने की, रखने की। कुत्ते का भी पेट जब भर जाता है और उसे कोई बढ़िया चीज मिलती है तो वह उसे उठाकर ले जाता है और गड्ढा खोद के गाड़ देता है... ४

- बात बिगड़ी बना देते हो तुम – संत पथिकजी.................. ६
- जीवन्मुक्त की सहज सिद्धि – स्वामी अखंडानंदजी............ ७
- मानव–विकास की प्रक्रिया में आध्यात्मिकता अत्यंत महत्त्वपूर्ण कारक है : विदेशी विचारक............. ८
- संत थानेदार रामसिंहजी का जीवन व उनके साथ प्रश्नोत्तरी. १०
- संत–समाज का यह मानना है... – महामंडलेश्वर श्री राजेन्द्रानंद गिरिजी......... ११
- करोड़ों लोगों की आस्था पर न हो आघात : अधिवक्तागण... १२
- अंग्रेजी के कारण भारत की भाषाई विविधता खतरे में......... १३
- क्यों सो रहा है ? – संत भोले बाबा.......................... १५
- 'हम और तुम तो बिल्कुल एक ही हैं !'......................... १६
- सभीके आधार हैं और सब उन्हींके पेट में हैं.................... १७
- ईसाई ही कर रहे हैं मिशनरियों के गुप्त मंसूबों को बेनकाब !.. १८
- शरद ऋतु में सेवनीय–असेवनीय.............................. २०
- आनेवालीं पुण्यदायी तिथियाँ व योग.......................... २२
- शराब–सेवन से प्रभावित होतीं कई पीढ़ियाँ.................. २४
- नासमझी से बंधन, समझदारी से मुक्ति........................ २६

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम । प्रकाशक : राकेशसिंह आर. चंदेल । मुद्रक : विवेक सिंह चौहान । प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद- ३८०००५ (गुजरात) । मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) - १७३०२५ । सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी

Email: lokkalyansetu@ashram.org, ashramindia@ashram.org Website: www.lokkalyansetu.org, www.ashram.org

मनुष्य की विलक्षणता

- पूज्य बापूजी

सभी प्राणियों से मनुष्य ऊँचा है कारण कि उसके पास दो रत्न हैं - भगवद्-लालसा और ब्रह्मजिज्ञासा।

जिज्ञासा से ब्रह्मज्ञान हो जाता है, लालसा से ब्रह्म-परमात्मा का रस पैदा होता है। मैं तो आपको सलाह देता हूँ कि आपके अंदर ये दो दिव्य शक्तियाँ हैं, उनको सहयोग करो। लालसा और जिज्ञासा को बढ़ाओ। कामना में समय बरबाद मत करो। कामनाएँ क्षीण होती जायें तथा जिज्ञासा और लालसा सफल होती जायें, यह सच्ची सफलता है।

एक होती है कामना, जो जीवमात्र में होती है – खाने की, पीने की, भोगने की, रखने की। कुत्ते का भी पेट जब भर जाता है और उसे कोई बढ़िया चीज मिलती है तो वह उसे उठाकर ले जाता है और गड्ढा खोद के गाड़ देता है कि 'कल खायेंगे' यह कामना है। 'पैसे अभी हैं पर थोड़े बैंक में पड़े रहें, फिर काम आयेंगे' यह कामना है। पेड़-पौधों को भी कामना होती है परंतु उनकी कामना और होती है, मनुष्य की कामना और होती है, कुत्ते की कामना और होती है पर कामना सभी जीवों में

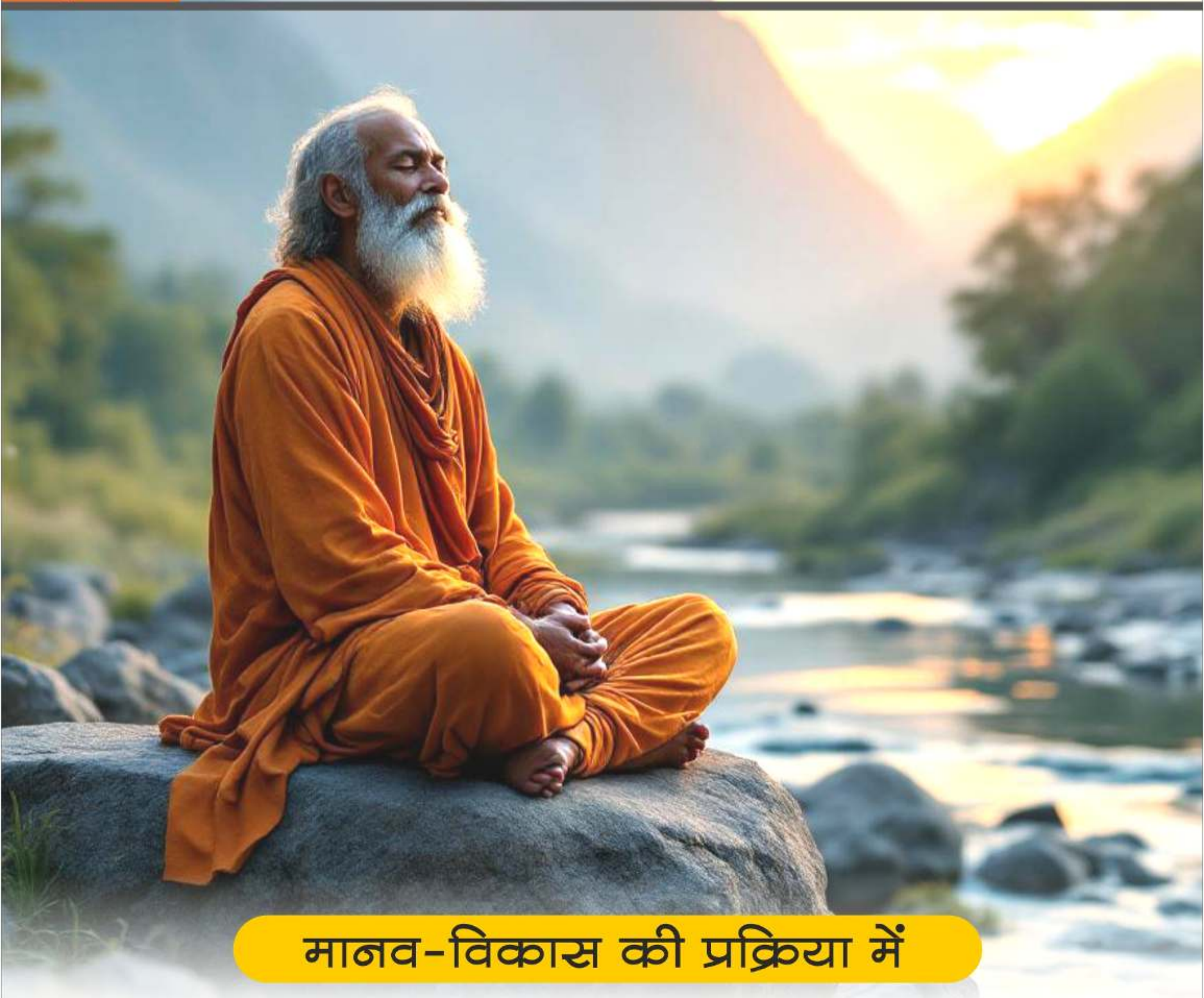

मानव-विकास की प्रक्रिया में

आध्यात्मिकता अत्यंत महत्त्वपूर्ण कारक है

: विदेशी विचारक

मानवता के पास एक ऐसी अद्वितीय ऊर्जा है जो व्यक्ति को जीवन की भौतिक स्थितियों से ऊपर उठाने और प्रकृति एवं उसके समस्त श्रेष्ठ गुणों से परे ले जाने में सक्षम है। सच्ची मानवता की यह चेतना जिन उच्च संवेदनाओं में प्रकट होती है वे हैं शुद्ध प्रेम, पूर्ण विश्वास, पवित्रता की भावना आदि।

....

कुछ समय पूर्व विदेशी विचारकों द्वारा लिखित एक लेख 'इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिलिजियन' में प्रकाशित हुआ, जिसमें वर्णन किया गया कि 'संसार की सच्ची समझ का निर्माण और आध्यात्मिक भावनाओं का विकास मानव-विकास की प्रक्रिया में अत्यंत महत्त्वपूर्ण कारक (factors) हैं। मानवता के पास एक ऐसी अद्वितीय ऊर्जा है जो व्यक्ति को जीवन की भौतिक

संत थानेदार रामसिंहजी

का जीवन व उनके साथ प्रश्नोत्तरी

हाल के पचास वर्ष पहले जयपुर में एक संत हो गये ठाकुर रामसिंहजी । ३ सितम्बर को उनकी जयंती है (दिनांक अनुसार) । वे जयपुर रियासत के ईमानदार एवं कर्तव्यनिष्ठ पुलिस अधिकारी थे। रामसिंहजी का चरित्र इतना उज्ज्वल था कि लोग उन्हें 'संत थानेदार' नाम से पुकारने लगे । इनके सद्‌गुरु फतेहगढ़ (उ.प्र.) के महात्मा रामचन्द्रजी थे । थानेदारजी अपने गुरु की याद में ऐसे मस्त रहते कि 'गुरु भगवान ! गुरु भगवान !...' कहते नहीं अघाते थे । सदा उनके सुमिरन में डूबे रहते,

करोड़ों लोगों की आस्था पर न हो आघात

: अधिवक्तागण

कुछ दिनों पहले जिला कचहरी, लखीमपुर खीरी (उ.प्र.) में 'जिला अधिवक्ता संघ' के पदाधिकारियों एवं अधिवक्ताओं तक ऋषि प्रसाद पहुँचायी गयी। 'अहमदाबाद आश्रम की आध्यात्मिक ऋषि भूमि तथा करोड़ों लोगों की आस्था का प्रश्न' इस विषय पर चर्चा हुई । पदाधिकारियों एवं अधिवक्ताओं ने बहुत आदर से ऋषि प्रसाद ली और सभीने ओलम्पिक के लिए आश्रम को तोड़े जाने की योजना का विरोध जताया। कुछ उद्गार :

अधिवक्ता श्री ओमप्रकाश वर्मा : आश्रम बहुत ही बरसों पुराना है । आश्रम से करोड़ों लोगों की आस्थाएँ जुड़ी हैं। अगर इसे हटाने का प्रयास भी किया गया तो बहुत ही आघात होगा। अगर सरकार चाहे तो नियोजित खेल-मैदान अन्यत्र शिफ्ट कर सकती है। आश्रम को गिराकर वहाँ पर खेल का मैदान बनाना उचित नहीं है।

अधिवक्ता श्री संजय वर्मा : देशभर के सभी आश्रमों का संचालन बापूजी के अहमदाबाद आश्रम से होता है। वहाँ पर पूजा-पाठ, ध्यान आदि होता है, मौन मंदिर वगैरह बने हैं। आश्रम का माहौल इतना अच्छा है कि जैसे ही हम लोग आश्रमवाले रोड पर पहुँचते हैं तो आश्रम के वाइब्रेशन से ओतप्रोत हो जाते हैं। फिर आश्रम के अंदर ऐसा लगता है कि कहीं स्वर्ग में आ गये हैं। ऐसी अनुभूति और कहीं नहीं होती । सरकार ने खेल-मैदान के लिए अहमदाबाद आश्रम को तोड़ने की जो योजना बनायी है वह बहुत गलत है। इस कदम से लाखों-करोड़ों लोगों को बहुत मानसिक-आध्यात्मिक हानि होगी। इसलिए सरकार को दूसरे विकल्पों को चुनना चाहिए।

(संकलक : सचिन शेरे)

ईसाई ही कर रहे हैं मिशनरियों के गुप्त मंसूबों को बेनकाब !

कोटा के मोतीपुरा में धर्मांतरित करने का कुत्सित प्रयास

जर्मनी की विचारक मारिया विर्थ कहती हैं : ''मिशनरियाँ किसी भी तरीके से धर्मांतरण करने का प्रयास करती हैं और खासकर समाज के गरीब वर्गों और यहाँ तक कि बच्चों को भी निशाना बनाती हैं। वे दावा करती हैं कि ईसाई धर्म ही सही धर्म है और हिन्दू धर्म पूरी तरह गलत है; और यदि कोई व्यक्ति ईसाइयत में धर्मांतरित नहीं होता तो वह नरक में जायेगा।

हाल ही में कोटा के मोतीपुरा गाँव में एक ईसाई मिशनरी ने भील जनजाति के ५० गरीब लोगों को एकत्र कर एक सभा का आयोजन किया, जिसमें उन्हें मकान, धन व विदेश-यात्रा का प्रलोभन दे के धर्मांतरित करने का कुत्सित प्रयास किया गया। लोगों के मन में हिन्दू धर्म के प्रति नफरत का जहर घोलने के लिए हिन्दू देवी-देवताओं के प्रति आपत्तिजनक टिप्पणियाँ की गयीं तथा उन्हें धर्मभ्रष्ट करने हेतु मांसाहारी भोजन परोसा गया। इस धर्मांतरण रैकेट का पर्दाफाश होते ही पुलिस ने जॉय मैथ्यू और कॉलिन माइकल नामक व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया।

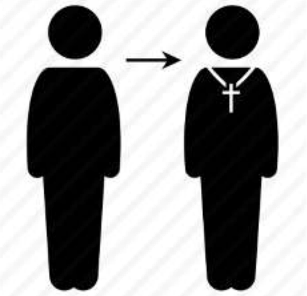

गौरतलब है कि कानूनों के बावजूद धर्मांतरण का जाल दिन दूना रात चौगुना बढ़ता नजर आ रहा है, जो देश के लिए बड़ी सतर्कता का विषय है। २०२० की कोरोना महामारी का ईसाई मिशनरियों ने जिस तरीके से फायदा उठाया था वह चौंकानेवाला है। बाइबिल का विभिन्न भाषाओं

शरद ऋतु आने पर बादल हट जाते हैं और सूर्य की किरणें तीव्र प्रतीत होती हैं। वर्षा ऋतु की छाँव और शीतलता के अभ्यस्त हमारे शरीर को शरद ऋतु की गर्मी असहनीय लगती है। वर्षा ऋतु में शरीर में संचित हुआ पित्त शरद ऋतु में स्वभावतः प्रकुपित हो जाता है इसलिए शरद ऋतु में पित्तजन्य रोग फैलने लगते हैं।

वर्षा ऋतु के २ महीनों में आकाश प्रायः बादलों से ढका रहता है। शरद ऋतु आने पर बादल हट जाते हैं और सूर्य की किरणें तीव्र प्रतीत होती हैं। वर्षा ऋतु की छाँव और शीतलता के अभ्यस्त हमारे शरीर को शरद ऋतु की गर्मी असहनीय लगती है। वर्षा ऋतु में शरीर में संचित हुआ पित्त शरद ऋतु में स्वभावतः प्रकुपित हो जाता है इसलिए शरद ऋतु में पित्तजन्य रोग फैलने लगते हैं। इनमें पित्तज ज्वर, अम्लपित्त (hyperacidity), अजीर्ण, रक्तपित्त (शरीर के किसी भी भाग से खून आना), शीतपित्त (urticaria), फोड़े-फुंसी होना, जलन, चक्कर आना, अधिक प्यास लगना, अधिक पसीना एवं अधिक क्रोध आना, चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, पीलिया, रक्ताल्पता (anaemia), अल्सर, मुँह में छाले, बाल झड़ना, रक्तप्रदर, मूत्रकृच्छ (पेशाब में रुकावट एवं जलन) आदि प्रमुख रूप से देखे जाते हैं।

खट्टा, खारा और तीखा रस पित्त को बढ़ाते हैं इसलिए शरद ऋतु में इनका सेवन नहीं करना चाहिए, करना ही हो तो यथासम्भव कम मात्रा में करना चाहिए।

छाछ, दही, नींबू, टमाटर, इमली, अचार,

अमेरिकी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ने किया बड़ा खुलासा :

शराब-सेवन से प्रभावित होतीं कई पीढ़ियाँ

माता-पिता द्वारा लम्बे समय तक शराब का सेवन करने से अगली पीढ़ी पर उसका स्थायी प्रभाव पड़ता है। उनकी संतानें तेजी से वृद्ध होती हैं और रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील बन जाती हैं। यह पाया गया कि पिता की शराब की लत उसकी संतान के स्वास्थ्य और व्यवहार को प्रभावित करती है। अत्यधिक शराब-सेवन का प्रभाव आनेवालीं कई पीढ़ियों तक पड़ सकता है, यहाँ तक कि उनके जन्म से पहले ही।''

जो लोग शराब का सेवन करते हैं वे केवल अपने जीवन के साथ ही नहीं बल्कि अपनी आनेवालीं कई पीढ़ियों के जीवन के साथ भी खिलवाड़ करते हैं। 'टेक्सस ए एंड एम विश्वविद्यालय' में फिजियोलॉजी के प्रोफेसर माइकल गोल्डिंग ने वहाँ की प्रयोगशाला में किये गये शोध के बारे में प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि ''माता-पिता द्वारा लम्बे समय तक शराब का सेवन करने से अगली पीढ़ी पर उसका स्थायी प्रभाव पड़ता है। उनकी संतानें तेजी से वृद्ध होती हैं और रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील बन जाती हैं। यह पाया गया कि पिता की शराब की लत उसकी संतान के स्वास्थ्य और व्यवहार को प्रभावित करती है। अत्यधिक शराब-सेवन का प्रभाव आनेवालीं कई पीढ़ियों तक पड़ सकता है, यहाँ तक कि उनके जन्म से पहले ही।''

सत्साहित्य-अमृत

इनमें आप पायेंगे :

❋ भगवद्-आश्रय, भगवत्सुमिरन क्यों है जरूरी ? ❋ जीवन के हर व्यवहार को कैसे जोड़ें धर्म से ? ❋ गौ माता की शास्त्रोक्त महिमा, जिसे जानकर आप पा सकते हैं आरोग्य, सुख-समृद्धि और पुण्यमय जीवन ❋ भारतीय संस्कृति की महान विभूतियों के गुणों को अपने जीवन में कैसे लायें ?

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य ! पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

पान-गुलाब-आँवला शरबत

आँवला, गुलाबजल, पान के पत्ते, सौंफ व इलायची युक्त

यह शीतल, मधुर शरबत स्वास्थ्यकर तो है ही, साथ ही सुगंधित और स्वादिष्ट भी है । यह भूख और पाचनशक्ति बढ़ाता है, पित्त और वात का शमन करता है । आंतरिक गर्मी, जलन, प्यास की अधिकता को दूर कर शक्ति और स्फूर्ति देता है ।

₹ ९५
९४० ग्राम

अमृत द्रव

सर्दी-जुकाम, खाँसी व सिरदर्द में असरकारक औषधि

यह एक बहुत ही असरकारक औषधि है । इसके प्रयोग से सर्दी-जुकाम, खाँसी, सिरदर्द तथा गले एवं दाँतों के रोगों में लाभ होता है । संक्रमण से रक्षा हेतु इसकी कुछ बूँदें कपड़े या रूई के फाहे पर ले के सूँघें ।

₹ ३०
१० मि.ली.

हृदय सुधा सिरप

रक्तवाहिनियों को खोलने में विशेष लाभदायी

यह हृदय की तरफ जानेवालीं तमाम रक्तवाहिनियों को खोलने में मदद करता है । यदि आप हृदयरोग से पीड़ित हैं और डॉक्टर ने बायपास सर्जरी करवाने के लिए कहा है तो उससे पहले इस सिरप का प्रयोग अवश्य करें ।

₹ २७०
६०० ग्राम

स्पेशल मालिश तेल

जोड़ों के दर्द के लिए उत्तम

यह तेल जोड़ों के दर्द के लिए अत्यंत उपयुक्त है । अंदरूनी चोट, पैर में मोच आना आदि में हलके हाथ से मालिश करके गर्म कपड़े से सेंकने पर शीघ्र लाभ होता है ।

₹ ५०
१०० मि.ली.

पंचरस

भूखवर्धक, रोगप्रतिकारक शक्ति वर्धक, हृदय के लिए हितकर

मधुमेह, हृदय की रक्तवाहिनियों के अवरोध, उच्च रक्तचाप, रक्त में वसा (fat) का बढ़ना आदि रोगों में लाभप्रद । पाचनशक्तिवर्धक, कृमिनाशक एवं रक्तशुद्धिकर अनुभूत रामबाण योग ।

₹ १२५
५०० मि.ली.

पुनर्नवा अर्क

शरीर के कोशों को नया जीवन प्रदान करनेवाला

यह अर्क किडनी व लीवर के समस्त रोग, उदररोग, सर्वांगशोथ (सूजन), जलोदर (ascitis), रक्ताल्पता (anaemia), पीलिया, बवासीर, भगंदर, हाथीपाँव, श्वास, खाँसी, किडनी व पित्ताशय की पथरी, संक्रामक व विषजन्य रोग, उपदंश तथा त्वचा-विकार में बहुत लाभदायी है ।

₹ ३५
२१० मि.ली.

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

संयम, सुसंस्कार और सफलता की नींव : विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

खेड़िया, जि. अलीगढ़ (उ.प्र.)

आलंदी, जि. पुणे (महा.)

जयपुर (राज.)

पानीपत

नंदिनीनगर, जि. दुर्ग (छ.ग.)

अतरौली (उ.प्र.)

लुधियाना

जलगाँव (महा.)

करोलबाग-दिल्ली

पटना

सहारनपुर (उ.प्र.)

बेंगलुरु

कवर्धा (छ.ग.)

जोलवा, जि. सूरत (गुज.)

गोंदिया (महा.)

शीतल शरबत वितरण सेवा की झलकें

वन्नारपेट-बेंगलुरु

गाजियाबाद

बरगढ़ (ओड़िशा)

रतलाम (म.प्र.)

भिलाई, जि. दुर्ग (छ.ग.)

पुणे (महा.)

हरदोई (उ.प्र.)

इंदौर

लोक कल्याण सेतु की सेवा करके पुण्यात्माओं ने पाया स्पर्शित प्रसाद

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Lok Kalyan Setu लोक कल्याण सेतु Rishi Prasad ऋषि प्रसाद Rishi Darshan ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक :** राकेशसिंह आर. चंदेल **मुद्रक :** विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक :** रणवीर सिंह चौधरी